राजस्थान पत्रिका
www.rajasthanpatrika.com

January 12, 2017

हिंदी को रोजगार से जोड़ने की जरूरत

सम्मेलन में एक हिन्दी शिक्षिका का सम्मान करते हुए।

चेन्नई. जब तक हिन्दी को बाजार नहीं मिलेगा उसका विकास नहीं होगा। अब समय आ गया है जब हिन्दी को रोजगार से जोड़ा जाए। इससे यह विश्वव्यापी बन पाएगी। स्टेला मैरिस कालेज के हिन्दी विभाग द्वारा बुधवार को शुरू हुए दो दिवसीय पांचवें अंतरराष्ट्रीय साहित्यिक सम्मेलन में वक्ताओं ने यह विचार व्यक्त किए। मौजूदा दौर में हिंदी के खरीदार घट रहे हैं। हिन्दी में खरीदकर पढ़ने का संस्कार घटता जा रहा है। हालत यह है कि कई विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग तो है लेकिन छात्र ही नहीं। ऐसे में वे अनुपयोगी बने हुए हैं। विवि से निकल गई तो हिन्दी विकसित नहीं हो पाई।

तमिलनाडु हिन्दी साहित्य अकादमी के सहयोग से आयोजित इस सम्मेलन का भारतीय भाषाओं में राष्ट्रीय चेतना विषयक सत्र से उद्घाटन हुआ। इस अवसर पर प्रवासी संसार नई दिल्ली के प्रवासी संपादक डा. राकेश पाण्डेय ने कहा हिन्दी के विकास पर यदि हमने अभी से ध्यान नहीं दिया तो हालात और बदतर हो जाएंगे। लंदन के साहित्यकार डा. तेजेन्द्र शर्मा ने कहा साठ के दशक में भारत के लोगों को ब्रिटेन ले जाया गया था।

उनमें अधिकांश पंजाबी एवं गुजराती समुदाय के लोगों की बहुतायत थी। इंग्लैण्ड में मंदिरों में हिंदी की कक्षाएं चलानी शुरू की गई।

वहां हिंदी को संवाद की भाषा बनाने के लगातार प्रयास हो रहे हैं। न्यूयार्क से आई सुषमा बेदी ने कहा अमरीका में हम हिदी सीखाने का निरन्तर प्रयास कर रहे हैं। केन्द्रीय हिंदी संस्थान दिल्ली के पूर्व निदेशक डा. गंगाप्रसाद विमल, साहित्य संगम चंडीगढ़ के अध्यक्ष डा. फूलचन्द मानव, बेंगलुरु के वरिष्ठ साहित्यकार डा. बी.वाई. ललितांबा समेत कई हिन्दीप्रेमी एवं साहित्यकार मौजूद थे। तमिलनाडु हिन्दी साहित्य की अध्यक्ष ड़ा. निर्मला एस. मौर्य, महासचिव डा. मधु धवन, उपाध्यक्ष ईश्वर करुण झा एवं डा. हुसैन वल्ली, सचिव डा. सुनीता जाजोदिया एवं आर. पार्वती, कोषाध्यक्ष डां. मजू रुस्तगी समेत अन्य पदाधिकारियों ने अतिथियों का सम्मान किया। संचालन डा. रविता भाटिया एवं डा. फातिमा ने किया।